प्रातःक्लास 26.2.68 ओमशांति पिताश्री शिवजयंती मधुबन

गीत– शिव स्वागत आज तुम्हारा.....। ओमशांति। बच्चों ने यह गीत सुना। अभी जिसको स्वागत करते हैं वह तो है छोटी बिंदी। उनको जाना जाता है। और आत्मा को भी जाना जाता है। इन आंखों से देख नहीं सकते। जिसको जानते ही नहीं उनको अगर सा0 हो भी समझ न सके ;क्योंकि यह है गुप्त। मनुष्य तो समझते हैं उनका नाम–रूप ही नहीं है ;परंतु बच्चे जानते हो ... हम पढ़ रहे हैं। यह तो जानते हो आत्मा ही पढ़ती है। आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं। यह कोई भी गीता आदि शास्त्रों में नहीं है। नई बात होने कारण मनुष्यों को विश्वास नहीं आता तो फिर ज्ञान यज्ञ में विघ्न डालते हैं। तुम कहेंगे गीता भगवान ने सुनाई ब्रह्मा तन से। वह कहेंगे कृष्ण ने सुनाई। अभी कृष्ण तो ऐसे कहते नहीं हैं मेरे तन में शिवबाबा कह रहे हैं। यह कहते हैं रुहानी बाप इस तन से बच्चों को समझा रहे हैं। राजयोग सिखा रहे हैं। यह भी कोई नई बात नहीं। कल्प2 ऐसे ही होता है इसलिए विघ्न पड़ते हैं। समझते नहीं हैं ,मूंझ पड़ते हैं यह ज्ञान फिर कहां से लाया?कोई शास्त्रों में तो है नहीं। कब भी पता नहीं पड़ता। तुम हो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के पक्के। तुम्हारी बुद्धि में है उंच ते उंच भगवान। फिर उनसे वर्सा मिलता है नई दुनियां में। नई दुनियां में इन ल0ना0 का राज्य था। यह है एम ऑब्जेक्ट। यह (ल0ना0) भारतवासी हैं ना। तुम बच्चे आकर राज्य करेंगे फिर यह जड़ मूर्तियां आदि होंगी नहीं। जब यह राज्य करते थे तो चैतन्य में थे। अभी उनकी जड़ चित्रों की पूजा करते हैं। यह राज्य करते थे। फिर कहां गए यह किसको भी पता नहीं है। प्रश्न भी नहीं उठा सकते हैं। कहां भी गए नहीं हैं। वही आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती आती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर 5000वर्ष बाद रिपीट होगी। फिर सतयुग आदि में यह (ल0ना0) होंगे। यह पुरुषोत्तम संगमयुग पर राज सीखेंगे। यह तुमको अभी पता पड़ा है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर यह राज्य सीखे अर्थात् राधे–कृष्ण की आत्मा ने राजयोग सीखा। राधे–कृष्ण ....नहीं। शरीर तो सांवरा ही था। गोरा नहीं था। नहीं तो श्याम–सुंदर नाम ही क्यों पड़े? श्रीकृष्ण तो गोरा होना चाहिए ना। फिर सांवरा क्यों रखा है? भक्तिमार्ग में कथायें तो बहुत बैठ सुनाते हैं। बाप आकर समझाते हैं ज्ञान औ(र) भक्ति है। ज्ञान मैं ही आकर देता हूं जिससे तुम राजयोग सीख विश्व में मालिक बन जाते हो। यह चित्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। भारत में तो ढेर के ढेर चि(त्र) मंदिर आदि हैं। जितने भारत में हैं उतने और कहीं नहीं हैं। तुम जानते हो भारत ही अविनाशी खंड है। बाप भी यहां आते हैं। पतितों को पावन बनाने भागीरथ में आते हैं। भागीरथ तो एक ही गाया हुआ है। यह है भाग्यशाली रथ। बाप ही पूरा राज आकर समझते हैं। वह रचता बाप ही रचना के आदि,मध्य, अंत को जानते हैं। वह है स्वर्ग का रचता। तो जरूर नर्क भी होगा ना। इसलिए बाबा ने प्रश्न बनाई थी – तुम सतयुग के श्रेष्ठाचारी हो या कलियुग के भ्रष्टाचारी हो? हरेक अपने से पूछे। मनुष्य अपन को श्रेष्ठाचारी तो कह न सके। सतयुग तो अभी है नहीं। प्रश्न बाबा ने बहुत अच्छी निकाली थी। पता नहीं छपाई है या नहीं। कोई की बुद्धि में बैठा होगा या नहीं। कोई की बुद्धि में आ जाता है तो झट काम कर लेते हैं। नहीं तो अपनी मत पर कुछ न कुछ बना देते हैं। गोल्डेन एज और आयरन एक तो है ना। सतयुगी सतोप्रधान दुनियां में आदि सनातन देवी–देवताएं ही रहते थे। और कोई थे नहीं। तुम बच्चों को ही बाप फिर से देवता बनाते हैं। देवताएं होते हैं सतयुग में। हैं वह भी मनुष्य ; परंतु दैवी गुण होने कारण वह पूजने लायक हैं। तमोप्रधान मनुष्य,सतोप्रधान देवताओं को पूजते हैं। तुम पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे। इसलिए तुमको सम्पूर्ण निर्विकारी देवता कहा जाता था। यहां तो सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कहेंगे। इसलिए जो नम्बरवन में थे उन्हों की महिमा गाई जाती है। सतयुग आदि में उन्हों का राज्य था। ....चैतन्य थे। अभी वह हैं नहीं। तुम बच्चे बैठ समझते हो हम आपको राधे–कृष्ण अथवा विष्णु के दो रूप ल0ना0 के 84जन्मों की कहानी सुनाते हैं। यह भी समझते हैं। तुम से ज्ञान लेंगे वही जो कल्प पहले

आये होंगे। तुम्हारे पास टॉपिक्स भी बहुत हैं। जैसे आज शिवजयंती है तो तुम कहेंगे हम शिव की बायोग्राफी बताते हैं। वही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। हम यह सुनावेंगे कि कैसे वह सारी झाड़ के आदि,मध्य,अंत का राज़ समझाते हैं। तुम पत्रे गिरावेंगे। ढिंढोरा पिटवावेंगे। अखबार में डालेंगे ;परंतु इससे भी कोई समझते नहीं हैं। टॉपिक तो बहुत हैं। चिनमयानंद का रोज अखबार में पड़ता है। आज फलाने अध्याय पर समझावेंगे। तुम भी कहेंगे आज फलाने टॉपिक पर समझावेंगे। हम उनके 84जन्म की कहानी बताते हैं। पूरे 84जन्म कौन लेते यह तो भगवान बिगर कोई समझा न सके। ज्ञान का सागर वह है। शिवजयंती भी मनाई जाती है तो जरूर यहां आते हैं ना। जयंती तो साकार मनुष्यों की ही होगी। जरूर यह आत्मा किस शरीर में प्रवेश करते हैं। प्रकृति का आधार लेते हैं। नया शरीर नहीं लेते हैं। खुद कहते हैं बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में जबकि वानप्रस्थ अवस्था होती है तब ही मैं प्रवेश करता हूं। इनमें बैठ तुमको सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज समझाता हूं। तो अभी हमको उनकी श्रीमत मिल रही है, जो फिर हम आपको समझाते हैं। ढेर के ढेर समझेंगे। रुहानी स्कूल खुलते जावेंगे। रुहानी बाप रूहों को ही समझाते हैं। रूह सुनती है। इसलिए घड़ी2 अपन को आत्मा समझना है। इसमें ही मेहनत लगती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। पतित–पावन मैं हूं। श्रीकृष्ण को तो पतित–पावन नहीं कहेंगे। वह तो 84जन्म पतित बनते हैं। बाप भी कहते हैं बहुत जन्मों के अंत में मैं प्रवेश करता हूं तो पतित हुआ ना। वही फिर पहले नम्बर में पावन बनना है। मैं आता ही हूं आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। स्थापना की बातें तो वंडरफुल है। बाप पहले2 अपनी पहचान देते हैं। यह समझानी और कोई दे न सके। इसमें टाइम लगता है ना। भक्तिमार्ग वाले कोई इतना जल्दी नहीं समझते हैं। अभी तुम भी फील करते हो। पहले तो कुछ भी समझ में नहीं आता था। अभी कितनी प्वाइंट्स चलती रहती है। आई0सी0एस0 जब पढ़ते हैं तो फील करते हैं इससे पहले वाली किताब तो कोई काम के नहीं। उससे तो आमदनी नहीं होती। पिछाड़ी का जब यह पढ़ते हैं तब ही नौकरी मिलती है। यहां पढ़ाई तो एक ही है। बाप कहते है। आज तुमको मैं गुह्य रमणीक बातें सुनाता हूं। ज्ञान का सागर है ना। और फिर सेकेंड में जीवनमुक्ति देता हूं। बाप के बन जाते हैं फिर तो स्वर्ग के मालिक ठहरे। यह भी बाप समझाते हैं दो बाप है। पारलौकिक बाप तो 21जन्मों के लिए वर्सा देते हैं। यह कितनी जबरदस्त कमाई है। एक तो तुम लायक बनते हो और पाई–पैसे के एवजे में तो तुम साहुकार बनते हो। बहुत उंच पद पाते हो। शिवबाबा से तुम सौणा कर लेते हो। बाबा तो शर्राफ भी है ना। कोई तो झट कह देते हैं बाबा यह सब कुछ आपका है। अमानत आपकी है। और कोई के पास भी रखन से तो डर है ;क्योंकि सब विनाश होने वाले हैं। मनुष्य तो ब्याज पर जाकर रखते हैं। आगे तो 3/4 आना ब्याज का मिलता था। अभी दो रुपया भी लेते हैं। बाप समझाते हैं अभी तो तुम कहां भी रखेंगे तो खतम हो जावेंगे। बैंक में रखेंगे तो वह भी तो खलास हो जावेगी ना। सारी यह दुनियां ही खलास होनी है। किनकी दबी रहेगी धूर में..... बैंक आदि कुछ भी न रहेंगे। स्टेट ही नहीं फिर स्टेट बैंक काहे का? बाप समझाते हैं यह सब विनाश हो जाना है। अभी देवी–देवता धर्म की स्थापना हो रही है। कोई2 मूंझते हैं कहां रखें यह तो सब खतम हो जावेगा। आप काम में लगा दो। बाप कहेंगे अच्छा, सर्विस में लगाओ। घेराव डालो। सेंटर्स खोलते रहो तो तुम्हारे काम आवेंगे। बाकी सब खतम हो जाना है। यह है सच्ची कमाई। हाथ ऐसे भरतू और खाली होती है ना। तुम बच्चे भरतू हाथ जावेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बाकी सारी दुनियां खाली हाथ जावेगी। वह ईश्वर अर्थ दान आदि करते हैं इनडायरैक्ट। और यह है डायरैक्ट। उनसे अल्पकाल लिए मिलता है। यहां डायरैक्ट करने से तुमको 21जन्मों लिए मिलता है। कितना फर्क है। बाप तो कोई से भी लेता नहीं है। बाप कहते हैं मैं आया ही हूं श्रीमत देने।

बाकी पैसा हम क्या करेंगे? मूलवतन में पैसा आदि कहां से आया? मैं हूं ही मूलवतन का वासी। साकार सृष्टि में तुम आते हो। तुम ही जमा करते हो जो फिर भविष्य 21जन्म लिए पाते हो। तुम पूछते हो क्या करें? बाप कहेंगे घेराव डालते जाओ। सेंटर्स खोलो। कहते हैं सेंटर तो खोलें, अब ब्राह्मणी चाहिए। ब्राह्मणी तो है नहीं। तैयार होकर सर्विसेबुल निकलते ही नहीं हैं। बंधन में फंस पड़ते हैं। पढ़कर फिर पढ़ा नही सकते तो मिलेगा क्या? प्रजा में चले जावेंगे। यहां तो तुम सत्यनारायण की कथा सुनाते हो। प्रजा की थोड़े ही सुनते हो। राजा–रानी पद पाना है तो सर्विस करनी पड़े। जीते जी मर कर बाप का बनना है। पहले जो मरे थे उन्हों से पूछो। उस समय से खिट2 चलती आ रही है। खयाल नहीं करते यह हो कैसे सकता? एक जवाहरी के पिछाड़ी इतने सब कैसे जा सकते? ऐसा जादू तो कब देखा नहीं। जरूर कुछ शक्ति है। बस ऐसे ही कहते रहते ;परंतु कौन सी शक्ति है, शक्ति क्या चीज है वह कुछ भी नहीं जानते। सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं। इस समय है रावणराज्य। 5विकारों की कितनी शक्ति हैं रावण मुठा मरता ही नहीं है। बुत बनाकर जलाते हैं फिर जाते है। लंका लूटने। अच्छा, एक बार लूटा फिर क्यों जाते हो?बाप ने तो समझाया है यह सारी दुनियां ही लंका है। इस समय है ही रावणराज्य। सोना आदि कुछ भी है नहीं तो लूटेंगे फिर क्या? सतयुग में कितना सोना, जवाहर आदि (थे)। सब रावण ने लूट खलास कर दिया है। बाप तो पूछते हैं ना बताओ हमने तुमको राजाई दी फिर वह कहां की? वह सोने के महल आदि सब कहां गए? कितने हीरे ,जवाहरों के महल थे। यह सोमनाथ का मंदिर किसने बनाया? तुम तो जानते हो ना। तुम कहेंगे इन्हों (ल0ना0) ने बनाया। अभी राज–भाग लेते हैं। फिर भक्तिमार्ग में सोमनाथ का मंदिर आदि बनावेंगे। यह तो निश्चय की बात है ना। जरूर राजा ही बनावेंगे ना। नम्बरवन जो साहुकार होगा वही बनावेंगे। राजाएं तो बहुत होंगे। एक को देख दूसरा भी बनाते होंगे। इतना बड़ा लश्कर आया तो एक ही मंदिर थोड़े ही लूटा होगा। शहर में भी तो घुसे होंगे। एक लाख लश्कर एक मंदिर में थोड़े ही लगे होंगे। तो यह सब खर्चा करते2 मंदिर बनाते2, शास्त्र आदि सुनाते2 पैसा ही खलास कर दिया है। गरीब बन पड़े हैं। जब तक लोन न लेवे तब तक रोटी भी पहुंचा न सके। इतना अनाज आता है तो यह देते हैं क्या? छआंक। क्या हाल है। यह खेल है हार और जीत का। फिर भी ऐसे ही चलेगा। ड्रामा का चक्र ऐसा फिरता रहता है यह तुम समझते हो। तुम भी पहले बेसमझ थे। बाप ने कितना समझदार बनाया है। अभी श्रीमत को हप करते जाओ। उस पर चलो ना। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। दूसरे को भाई की दृष्टि से देखो। पवित्र बनो। शरीर का भान न रहना चाहिए। अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। दूसरे को ज्ञान भी आत्मा समझ कर दो। प्रैक्टिस करो। यह शिवजयंती भी तुम मनाते हो औरों को जगाने लिए। तुम तो जगे हुए हो। गीत आदि भी तुमको थोड़े ही सुनना है। तुम तो सभी कुछ जानते हो ना। मनुष्य जयंतियां मनाते हैं झूठी। तुम मनाते हो सच्ची। बोलो, जब शिवबाबा आया था तो अनेक धर्म का विनाश, एक धर्म की स्थापना की थी। राजयोग सिखाया था। इसलिए बाबा ने समझाया था जहां–तहा तुम ल.ना. का चित्र रखो। तुम ब्राह्णों की यह एमऑबजेक्ट है। ल.ना. के चित्र को फ्रेम कराकर घर के अंदर चाहे बाहर लगा दो। जो कोई भी देखे तो पूछे। बोलो हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं पावन बनो। पतित–पावन कोई गंगा नहीं है। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं पावन बनो तो पावन दुनियां के मालिक बन जावेंगे। कोई भी देहधारी को याद न करो। यह ल.ना. का चित्र देखकर सभी खुश होंगे। पहले तो इनको आकर नमस्कार करेंगे। बोलो बाप को याद करो तो यह पद पावेंगे। भल जयंती हो वा न हो। यह चित्र तुम्हारा लगा रहे। जो भी ब्राह्मण बच्चे हैं उन्हों के पास यह चित्र जरूर लगी रहे तो समझेंगे यह तो देवताओं को मानने वाले हैं। पूछे तो सही कि यह क्या है। बहुत करके ब्रह्मा के चित्र पर ही चिढ़ते हैं। तुम तो समझावेंगे प्रजापिता ब्रह्मा तो है ना।

इतने ढेर ब्रह्मा के बच्चे हैं। तुम भी हो। ब्रह्मा के बच्चे तो शिवबाबा के पोत्रे ठहरे। औरों को समझाने लिए तो रोज2 समझाया जाता है। वह सब हैं जिस्मानी स्कूल। यह है रुहानी। इनके केंद्र तो बहुत होनी चाहिए। सभी को लक्ष्य बताने लिए तुम खोलते हो। बाकी कोई धंधा आदि तो कर न सके। शिवबाबा के खजाने में जमा होता है। कोई अपनी आजीविका के लिए अपना ज्ञान बैठ सुनाते हैं। यह भी एक चोरी, ठगी,शैतानी हुई। न उनका फायदा हो सकता है, न देने वाले का। शिवबाबा के भंडारे में जमा हुआ ही नहीं। शिवबाबा के अमानत खाने वाले महान पापात्मा हो जाते हैं। ऐसे भी बहुत निकलेंगे जो झूठ2 बताकर सेंटर खोल बैठ जावेंगे। वह देते हैं शिवबाबा को। अगर बीच में दूसरा खा गया तो एकदम रसातल चले जावेंगे। यह हुआ महापाप। यह भी ड्रामा में पार्ट है। बच्चियां सितम भी कितना सहन करती हैं। कैसे भी करके बाप से वर्सा तो जरूर लेना है। पापात्माएं बहुत मार–पीट नंगन कर बाहर निकाल देते हैं। रिपोर्ट कर सकते हैं ;परंतु इसमें बड़ी साफ दिल चाहिए। डायबोर्स दे फिर जहां चाहे चले जाये। हिम्मत चाहिए ना। हमको तो कैसे भी करके बाप से वर्सा लेना है। डायबोर्स देने बिगर तो कोई को रख नहीं सकते हैं। बहुत खिट–पिट हो जाती है। कुमारियों को भी चिट्ठी बिगर रख नहीं सकते। जिनको तीर लग जाता है वह तो बहादुरी से बोलते हैं हमको विकार न देना है। जाकर दूसरी शादी करे। गवर्मेंट कुछ भी कर न सके। बाहर का कुछ भी शो आदि करना यह तो दुनियावी बातें हैं। अपना ज्ञान ही है गुप्त। एक तो पवित्र रहना है और बाप को याद करना है। आप समान भी बनाना है। सतोप्रधान में बड़ी मेहनत है। यह तो बाप गैरन्टी करते हैं सबको शांतिधाम में ले जाउंगा ;परंतु फिर नई दुनियां में उंच पद पाना इसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे वह सुखधाम में आवेंगे। यह तो गैरन्टी है। बाकी है पढ़ाई पर । जितना पढ़ेंगे उतना उंच पद पावेंगे। वास्तव में तुम्हारी तो रोज जयंति है। यह भी मनुष्यों को जगाने लिए फंक्शन आदि करते हैं। यहां तो बाप है। फिर तुम क्या जलसा बनावेंगे? तुमको तो बाप से वर्सा लेने मेहनत करनी है। पवित्र बनना है। यहां की बात ही न्यारी है। बाप के बने वर्सा तो हो ही जाता है। फिर है श्रीमत पर चलना। जगना और जगाना यह तुम्हारा धंधा है। सबको रास्ता बताना है। यहां इन आंखों से तुम जो देखते हो उनका विनाश होना है। इनसे क्या दिल लगानी है? इनसे दिल हटती जाये टाइम लगता है। नये मकान बनाने में कब 6मास ,कब 12/14मास भी लग जाते हैं। पुराने में जो रहते हैं जानते हैं हम नये महल में जावेंगे। पुराने से दिल हटती जावेगी। यह तो सब खतम हो जाने वाली है। मनुष्यों के साथ मकान आदि भी खतम हो जावेंगे। आत्मा (ए)क शरीर छोड़ जाकर दूसरा शरीर लेगी। हम तो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। पवित्र बनते2 शरीर छूट जावेगा। आत्मा और शरीर तो पवित्र थे सो अभी अपवित्र है। तुम जानते हो हम ही यह थे। फिर यह राजाई पद पाना है। बाप श्रीमत तो बहुत अच्छी देते हैं। कहते हैं बाबा मत तो बहुत अच्छी है ;परंतु बंधन है। वह तो चुक्तू करना है ना युक्ति से। विघ्न तो पड़ेंगे। अत्याचार होगा, यह सब होंगे। जो कल्प पहले हुआ था सो फिर जरूर होगा। हो रहा है,कुछ नई बात नहीं है। कल्प2 तुम राज्य लेते हो, गंवाते हो। तुम शिवशक्ति सेना इस समय बाप के बने हो। तुम्हारे में शक्ति है विकर्म विनाश करने की , मारने की नहीं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। विश्व के मालिक बनाने वाले को तुम भूलते क्यों हो? कितनी सहज पढ़ाई है।

<u>बापदादा हस्ते महावाक्य–</u> मीठे2 रुहानी पदमापदम भाग्यशाली रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार बाद समाचार कि सभी सेंटर्स के बच्चों के यादप्यार पत्र सौगात शिवजयंती की और लिस्ट ,पोतामेल आदि पाई। सभी को यादप्यार और पहुंच लिख रहे हैं। मुरली द्वारा रेस्पांड कर रहे हैं। बच्चों की दुनियां अमरलोक लिए पदमा पदम2। जन्म लिए जमा हो रही है। ऐसे ही निश्चय जानना जी। यही सच्ची कमाई। यादप्यार ,विदाई। लिस्ट और पोतामेल जिनकी न आई है तो मुरली बंदर की जावेगी। अच्छा, विदाई। ओमशांति।